IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मण्डल का सामरिक महत्व : एक रणनीतिक विश्लेषण

शोधार्थी : विक्रम सिंह

भूगोल विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,जोधपुर।

शोध निर्देशक :– डॉ. जयसिंह

(सेवानिवृत प्रो.) भूगोल विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,जोधपुर।

शोध सारांश :– उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत के पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित यह मण्डल न केवल रेलवे परिवहन व्यवस्था का एक प्रमुख अंग है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, क्षेत्रीय विकास और सामरिक गतिविधियों का भी केन्द्रीय आधार है। यह मण्डल राजस्थान के पश्चिमी हिस्सेकृ जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर और नागौर जैसे जिलों को जोड़ते हुए भारत–पाकिस्तान सीमा से सीधे सटा हुआ है। इस भौगोलिक स्थिति के कारण इसकी भूमिका केवल यात्री और माल ढुलाई तक सीमित न होकर रणनीतिक महत्व के रूप में और भी व्यापक हो जाती है। जोधपुर मण्डल की सबसे बड़ी सामरिक विशेषता इसकी सीमाई उपयोगिता है। भारत – पाक युद्ध (1965 और 1971) के समय इस मण्डल की रेलवे लाइनों ने सैनिकों, हथियारों और रसद सामग्री की आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान में भी यह मण्डल सेना की तैनाती, अभ्यास और आपूर्ति शृंखला को सक्षम बनाने में अग्रणी है। जैसलमेर और बाड़मेर जैसे रेगिस्तानी सीमाई क्षेत्रों में सैन्य अभ्यास, हवाई अड्डों और छावनियों तक पहुँचाने में जोधपुर मण्डल की रेल लाइनों का कोई विकल्प नहीं है। आर्थिक और सामरिक समन्वय के स्तर पर यह मण्डल भारत की ऊर्जा सुरक्षा में भी योगदान देता है। बाड़मेर के तेल क्षेत्र और रिफाइनरी, लिग्नाइट खदानें तथा खनिज संपदा की ढुलाई सीधे देश के औद्योगिक केंद्रों तक पहुंचाई जाती है। यह न केवल आर्थिक मजबूती लाता है, बल्कि सामरिक दृष्टि से ऊर्जा संसाधनों की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करता है। इसके साथ ही, मण्डल द्वारा खनिज और पेट्रोकेमिकल उत्पादों का सुरक्षित और त्वरित परिवहन देश की आत्मनिर्भरता और सामरिक शक्ति को बल देता है।

भौगोलिक दृष्टि से यह मण्डल थार मरुस्थल की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में रेल संपर्क बनाए रखता है। रेतीले तूफान, उच्च तापमान और सीमाई चुनौतियों के बावजूद रेलवे का संचालन यह दर्शाता है कि इस क्षेत्र में सैन्य और नागरिक आवागमन कितनी मजबूती से जुड़ा है। रेल नेटवर्क यहां न केवल सैनिक बलों की त्वरित तैनाती संभव बनाता है बल्कि आपदा प्रबंधन, राहत कार्य और सीमावर्ती क्षेत्रों में संचार का आधार भी है।

रणनीतिक दृष्टि से यह मण्डल भारत की "पश्चिमी रक्षा रेखा" का आधार कहा जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के समीप होने के कारण इसकी हर रेल लाइन और स्टेशन सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील है। सेना और सीमा सुरक्षा बलों के लिए यह मण्डल लॉजिस्टिक कॉरिडोर की तरह कार्य करता है। साथ ही, चीनदृपाक

के बदलते सामरिक समीकरणों में यह क्षेत्र भारत की त्वरित प्रतिक्रिया क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। भविष्य की संभावनाओं में, जोधपुर मण्डल को **"डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर"** और **"बॉर्डर इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास"** योजनाओं से और अधिक सामरिक बल मिलेगा। यह न केवल सैन्य रसद को मजबूत करेगा बल्कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं पर्यटन को भी गति देगा। उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल केवल एक क्षेत्रीय रेल मण्डल नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, सीमाई संरक्षण और आर्थिक सामर्थ्य का एक रणनीतिक स्तंभ है। इसकी सामरिक भूमिका अतीत में सिद्ध हो चुकी है और भविष्य में भी यह भारत की रक्षा और विकास नीति का अभिन्न अंग बना रहेगा।

संकेताक्षर :– जोधपुर मण्डल का संक्षिप्त परिचय, 1909 में भारतीय रेल नेटवर्क का विस्तार, एक रणनीतिक विश्लेषण, रेलवे की भूमिका, प्रमुख रेल लाइनों का विवरण, उत्तर पश्चिम रेलवे जोधपुर मण्डल की चुनौतियाँ, सरकारी नीतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएँ, SWOT ।

प्रस्तावना :– उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल राजस्थान के पश्चिमी अंचल में स्थित है और यह भारतदृ पाक सीमा से निकटता के कारण सामरिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर और नागौर जैसे जिलों को जोड़ने वाला यह मण्डल न केवल क्षेत्रीय यातायात और माल ढुलाई की धुरी है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और सीमा रक्षा की दृष्टि से भी अपरिहार्य है। 1965 और 1971 के युद्धों के दौरान इस मण्डल की रेल लाइनों का उपयोग सैनिकों, टैंकों, हथियारों और रसद सामग्री के त्वरित परिवहन के लिए किया गया था, जिससे इसकी सामरिक भूमिका स्पष्ट होती है। इस शोध का उद्देश्य जोधपुर मण्डल के सामरिक महत्व का बहुआयामी विश्लेषण करना है। इसमें सीमा सुरक्षा की दृष्टि से सैन्य आपूर्ति, आपदा प्रबंधन में रेलवे की भूमिका, सीमा पार व्यापार की संभावनाएँ, तथा रक्षा प्रतिष्ठानों से जुड़े संपर्क का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही, यह अध्ययन इस मण्डल की आर्थिक उपयोगिताकृखनिज संपदा, कृषि उत्पाद और ऊर्जा संसाधनों के परिवहनकृको भी सामरिक दृष्टि से जोड़ेगा।

जोधपुर मण्डल का भौगोलिक स्वरूप मरुस्थलीय और दुर्गम है, जहाँ रेत जमाव, जल की कमी और चरम जलवायु जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। इसके बावजूद रेलवे नेटवर्क ने यहाँ स्थायित्व बनाए रखा है और रक्षा आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत किया है। वर्तमान में ब्रॉडगेज रूपांतरण, डबल लाइन परियोजनाएँ और विद्युतीकरण जैसी योजनाएँ इस मण्डल को और अधिक रणनीतिक रूप से सक्षम बना रही हैं। इस शोध के माध्यम से यह समझना उद्देश्य होगा कि जोधपुर मण्डल न केवल राजस्थान की जीवनरेखा है, बल्कि भारत की पश्चिमी सीमा का सामरिक स्तंभ भी है। इसके ऐतिहासिक योगदान, वर्तमान भूमिका और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करके यह अध्ययन रेलवे और राष्ट्रीय सुरक्षा के मध्य गहरे संबंधों को स्पष्ट करेगा।

जोधपुर मण्डल का संक्षिप्त परिचय

उत्तर पश्चिम रेलवे (संक्षिप्त रूप में NWR) भारत के 19 रेलवे जोनों में से एक है। इसका मुख्यालय जयपुर में है।ख1, राजस्थान, गुजरात, पंजाब और हरियाणा राज्यों में इसकी रेल लाइन की लंबाई 5,761 किलोमीटर (3,580 मील) से अधिक है। NWR जोधपुर से कराची तक अंतर्राष्ट्रीय रेल सेवा थार एक्सप्रेस का संचालन करता है। यह जोन 1,500 किलोमीटर लंबे पश्चिमी समर्पित मालवाहक गलियारे के संचालन के कारण दिल्ली–मुंबई औद्योगिक गलियारा (DMIC) परियोजना का प्रमुख प्रवर्तक है।

1909 में भारतीय रेल नेटवर्क का विस्तार

1882 में, राजपुताना रेलवे द्वारा मारवाड़ जंक्शन से पाली तक 1,000 मिमी (3 फीट 3⅜ इंच) चौड़ी मीटर–गेज लाइन का निर्माण किया गया था। इसे 1884 में लूनी तक और 9 मार्च 1886 को जोधपुर तक विस्तारित किया गया था। न्यू जोधपुर रेलवे को बाद में बीकानेर रेलवे के साथ मिलाकर 1890 में जोधपुर–बीकानेर रेलवे बनाया गया, जब बीकानेर रियासत और जोधपुर रियासत ने राजपूताना एजेंसी के भीतर जोधपुर–बीकानेर रेलवे का निर्माण शुरू किया। 1892 में, 1,000 मिमी (3 फीट 3⅜ इंच) चौड़ी मीटर गेज जोधपुर–बीकानेर लाइन को राजपूताना–मालवा रेलवे के तहत चालू किया गया था, जोधपुर–मेड़ता रोड खंड 7 अप्रैल को, मेड़ता रोड–नागौर खंड 15 अक्टूबर को और नागौर–बीकानेर खंड 8 दिसंबर को चालू किया गया था। 1902–03 में, जोधपुर–बीकानेर लाइन को बठिंडा तक विस्तारित किया गया ताकि इसे बॉम्बे, बड़ौदा और मध्य भारत रेलवे के मीटर–गेज खंड और हनुमानगढ़ होते हुए उत्तर पश्चिम रेलवे की दिल्ली–फाजिल्का लाइन के मीटर गेज से जोड़ा जा सके। 1925 में, संयुक्त इकाई जोधपुर और बीकानेर रेलवे को दो स्वतंत्र रेलवे कंपनियों के रूप में कार्य करने के लिए विभाजित कर दिया गया। स्वतंत्रता के बाद, जोधपुर रेलवे का एक हिस्सा पश्चिमी पाकिस्तान में चला गया। 1926 में, मीटर गेज के डिब्बों और वैगनों की समय–समय पर ओवरहालिंग के लिए बीकानेर (लालगढ़) में एक कार्यशाला स्थापित की गई। 1952 में, 6 नवंबर को जोधपुर–बीकानेर लाइन को पश्चिम रेलवे में मिला दिया गया। 1992 के आसपास या उससे पहले, जोधपुर–बीकानेर लाइन को मीटर गेज से 1,676 मिमी (5 फीट 6 इंच) चौड़ी ब्रॉड गेज में बदलने का निर्माण कार्य, फुलेरा लिंक के साथ, शुरू हुआ था और यह 2008 तक ब्रॉड गेज जोधपुर–मेड़ता सिटी–बीकानेर–बठिंडा लाइन के रूप में काम कर रही थी।, 2002 में, 1 अक्टूबर को उत्तर पश्चिम रेलवे जोन अस्तित्व में आया। 2012 में, जोधपुर और बीकानेर रेलवे से संबंधित वस्तुओं को प्रदर्शित करने के लिए बीकानेर में बीकानेर हेरिटेज रेल संग्रहालय खोला गया।

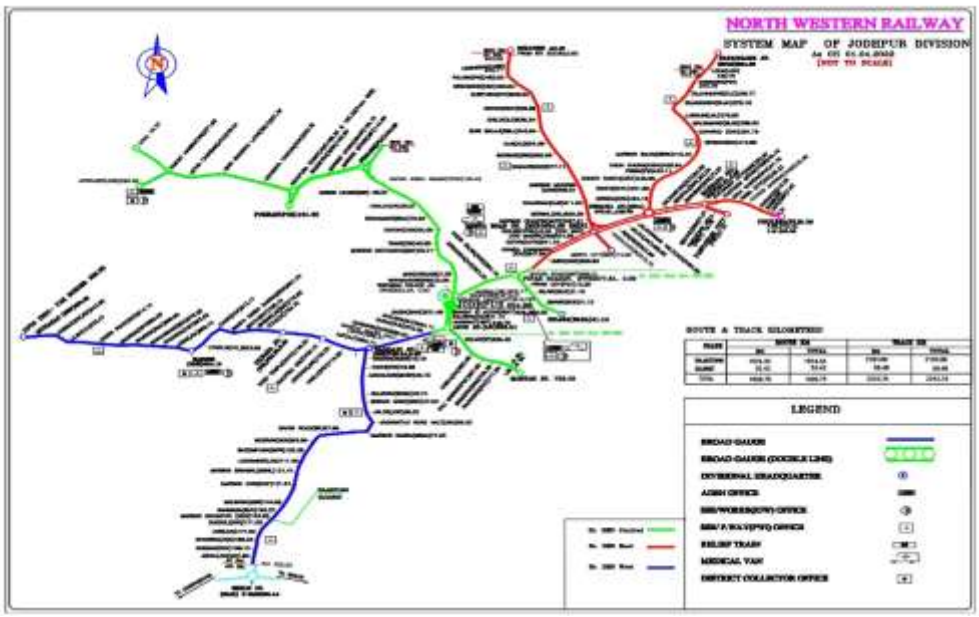

1884 में, राजपुताना–मालवा रेलवे ने दिल्ली–फाजिल्का लाइन के 1,000 मिमी (3 फीट 3⅜ इंच) चौड़े मीटर–गेज दिल्ली–रेवाड़ी खंड को बठिंडा तक विस्तारित किया, अविश्वसनीय स्रोत जिसे दक्षिणी पंजाब रेलवे कंपनी ने 1897 में दिल्ली–बठिंडा–समसत्ता लाइन खोली। यह लाइन मुक्तसर और फाजिल्का तहसीलों से होकर गुजरती थी और समसत्ता (अब पाकिस्तान में) के माध्यम से कराची तक सीधा संपर्क प्रदान करती थी। 18 फरवरी 2006 को, थार एक्सप्रेस, एक भारतीय नॉन–स्टॉप अंतर्राष्ट्रीय यात्री ट्रेन, जो भारतीय रेलवे द्वारा अपने स्वयं के डिब्बों और इंजनों का उपयोग करके भारत में जोधपुर और पाकिस्तान में कराची के बीच साप्ताहिक रूप से संचालित की जाती थी।

इससे पहले, सिंध मेल ट्रेन इस मार्ग पर 1900 से 1965 तक चलती थी, जब 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में पाकिस्तानी वायुसेना ने इस रेल लाइन पर बमबारी की थी। थार लिंक एक्सप्रेस को 41 साल बाद 2006 में पहले हुए रेल संचार समझौते के आधार पर चलाया गया था। 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के बाद भारतीय सेना द्वारा बांग्लादेश की सफल मुक्ति के लिए बिगड़े संबंधों को कम करने हेतु भारत और पाकिस्तान ने 1976 में रेल संचार समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। यह रेल संचार समझौता हर तीन साल में नवीनीकृत होता है और वर्तमान में यह जनवरी 2019 तक वैध है। 1990 के दशक में, दिल्ली–जयपुर लाइन और जयपुर–अहमदाबाद लाइन को ब्रॉड गेज (बीजी) में परिवर्तित किया गया था। 2007 में, फुलेरा से चित्तौड़गढ़ होते हुए रतलाम जंक्शन जाने वाली लाइन को भी ब्रॉड गेज में परिवर्तित किया गया था।

2008 और 2011 के बीच, बीकानेर–रेवाड़ी लाइन को ब्रॉड गेज में परिवर्तित किया गया था।

2009 में, मीटर–गेज हिसार–सादुलपुर खंड को ब्रॉड गेज में परिवर्तित कर दिया गया।

दिसंबर 2017 तक, रेलवे ने पहली बार चार सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों, उत्तर रेलवे क्षेत्र, उत्तर मध्य रेलवे क्षेत्र, उत्तर पूर्व रेलवे क्षेत्र और उत्तर पश्चिम रेलवे क्षेत्र में 6,095 जीपीएस–सक्षम **"फॉग पायलट असिस्टेंस सिस्टम" रेलवे** सिग्नलिंग उपकरण लगाए। इस प्रकार, धीमी गति से चलने वाली ट्रेनों को नियंत्रित करने के लिए ट्रेन की पटरियों पर पटाखे छोड़ने की पुरानी प्रथा को समाप्त कर दिया गया। इन उपकरणों की मदद से, ट्रेन पायलटों को सिग्नल, लेवल–क्रॉसिंग गेट और अन्य ऐसे निकटवर्ती मार्करों के स्थान के बारे में पहले से ही सटीक जानकारी मिल जाती है।ख्जोधपुर मण्डल की भौगोलिक स्थिति और सीमाएँ इसे भारत के पश्चिमी रक्षा तंत्र का आधार बनाती हैं। भारतदृपाक सीमा की निकटता इसे सामरिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील और महत्वपूर्ण बनाती है। वहीं, थार मरुस्थल और रेगिस्तानी भू–भाग की चुनौतियाँ इस नेटवर्क के संचालन को कठिन बनाती हैं, परंतु यही कठिनाइयाँ इस मण्डल की सामरिक उपयोगिता को और अधिक प्रासंगिक बना देती हैं। इस प्रकार, जोधपुर मण्डल न केवल राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों का जीवनधारा है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक रणनीति का भी एक अभिन्न स्तंभ है।

एक रणनीतिक विश्लेषण

भारत का रेलवे नेटवर्क विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है, जो देश की सामाजिक, आर्थिक और सामरिक संरचना का आधार स्तंभ माना जाता है। इस नेटवर्क में उत्तर पश्चिम रेलवे (North Western Railway – NWR) का विशेष स्थान है, क्योंकि यह भारत के पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों को जोड़ता है। उत्तर पश्चिम रेलवे के अंतर्गत आने वाला जोधपुर मण्डल न केवल राजस्थान के मरुस्थलीय हिस्सों में जीवनरेखा है बल्कि सामरिक दृष्टि से भी यह भारत की पश्चिमी रक्षा रेखा का एक महत्वपूर्ण अंग है। भारतदृपाक सीमा से निकटता, थार मरुस्थल की भौगोलिक चुनौतियाँ और सीमावर्ती जिलों में रक्षा प्रतिष्ठानों की उपस्थिति इस मण्डल को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती हैं।

1. सीमा सुरक्षा दृष्टि से सैन्य सामग्री, सैनिकों व रसद की आपूर्ति

जोधपुर मण्डल का सबसे बड़ा महत्व इसकी सीमाई उपयोगिता है। यह मण्डल सीधे भारत – पाक सीमा से सटे जिलों जैसलमेर और बाड़मेर को देश के आंतरिक हिस्सों से जोड़ता है।

(क) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :– 1965 और 1971 के भारत – पाक युद्धों में जोधपुर मण्डल की रेल लाइनों ने सैन्य बलों की आवाजाही और हथियारों की आपूर्ति में अभूतपूर्व योगदान दिया। इन युद्धों में बाड़मेर, जैसलमेर और जोधपुर के सैनिक अड्डों तक पहुँचने के लिए यही रेल नेटवर्क मुख्य आधार था। युद्धकालीन परिस्थितियों में रेलवे की त्वरित संचालन क्षमता ने भारत की सामरिक सफलता को मजबूत किया।

(ख) सैन्य रसद आपूर्ति :– मुनाबाव, गडरा रोड और जैसलमेर स्टेशन सामरिक दृष्टि से संवेदनशील हैं, जहाँ से सीमा तक हथियार, ईंधन और सैन्य उपकरण पहुँचाए जाते हैं। रेलवे वैगनों का उपयोग भारी मशीनरी, टैंक और गोलादृबारूद पहुँचाने में होता है, जो सड़क मार्ग से कठिन और महंगा है। सेना की नियमित आवश्यकताओं जैसे राशन, पानी और चिकित्सा सामग्री भी इसी नेटवर्क से पहुँचती हैं।

(ग) त्वरित सैनिक तैनाती :– रेलवे नेटवर्क की वजह से भारतीय सेना अल्प समय में हजारों सैनिकों को सीमावर्ती छावनियों तक तैनात कर सकती है। यह त्वरित तैनाती युद्धकाल में निर्णायक भूमिका निभाती है।

2. आपदा प्रबंधन : राहत एवं पुनर्वास में भूमिका

थार मरुस्थल का यह क्षेत्र प्राकृतिक आपदाओं से अछूता नहीं है। कभी बाढ़, कभी सूखा और कभी महामारी जैसी परिस्थितियाँ यहाँ आती रही हैं। ऐसे में रेलवे नेटवर्क विशेषकर जोधपुर मण्डल राहत पहुँचाने में महत्वपूर्ण साबित होता है।

(क) बाढ़ और जल संकट – राजस्थान के पश्चिमी जिलों में बरसात के दौरान अचानक बाढ़ जैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। उस समय रेलवे नेटवर्क राहत सामग्री, दवाइयाँ और खाद्य पदार्थ त्वरित रूप से प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँचाता है। दूसरी ओर, लम्बे समय तक चलने वाले सूखे की स्थिति में पेयजल टैंकरों की आपूर्ति भी इसी नेटवर्क से संभव होती है।

(ख) महामारी और आपात स्थितियाँ – कोविड–19 महामारी के दौरान "श्रमिक स्पेशल" और "ऑक्सीजन एक्सप्रेस" जैसी ट्रेनों ने इस क्षेत्र की जनसंख्या को राहत पहुँचाने का कार्य किया। दूरस्थ और विरल जनसंख्या वाले इलाकों में दवाइयाँ और चिकित्सकीय सामग्री पहुँचाने में रेलवे का योगदान अपरिहार्य रहा।

(ग) आपदाकालीन सैन्य उपयोगिता – किसी आपदा की स्थिति में सेना भी राहत कार्य करती है। उस समय सेना के वाहनों, उपकरणों और राहत सामग्री को प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँचाने के लिए जोधपुर मण्डल की रेल लाइनें आधार प्रदान करती हैं।

3. सीमा पार व्यापार (संभावनाएँ और प्रतिबंध)

जोधपुर मण्डल का सामरिक महत्व केवल सैन्य दृष्टि से ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और कूटनीति के संदर्भ में भी है।

(क) थार एक्सप्रेस का ऐतिहासिक महत्व – थार एक्सप्रेस जोधपुर से मुनाबाव होते हुए पाकिस्तान के खोखरापार तक चलती थी। यह ट्रेन दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और पारिवारिक संबंधों का प्रतीक थी और सीमित पैमाने पर व्यापार का भी माध्यम बनी। हालांकि, कूटनीतिक तनाव और सुरक्षा कारणों से यह सेवा समयदृसमय पर बाधित होती रही।

(ख) व्यापारिक संभावनाएँ – अगर भारतदृपाक संबंधों में सुधार होता है तो इस मण्डल के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को नया आयाम मिल सकता है। खनिज, पेट्रोलियम उत्पाद और कृषि वस्तुओं का आदान–प्रदान इस

मार्ग से संभव है। सीमा पार व्यापार से न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिलेगा बल्कि यह भारत की "पश्चिम एशिया नीति" को भी मजबूती देगा।

(ग) वर्तमान प्रतिबंध – सुरक्षा कारणों और आतंकवाद के खतरे के चलते सीमा पार व्यापार सीमित और नियंत्रित है। रेल लिंक का उपयोग मुख्यतः राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

4. रक्षा प्रतिष्ठानों से जुड़ाव

जोधपुर मण्डल की सामरिक शक्ति इस बात से भी स्पष्ट होती है कि यह देश के कई महत्वपूर्ण रक्षा प्रतिष्ठानों से सीधा जुड़ा है।

जोधपुर एयरबेस – भारतीय वायुसेना का एक प्रमुख बेस, जो पाकिस्तान सीमा के नजदीक स्थित है।

जैसलमेर एयरबेस – पश्चिमी सीमाओं पर निगरानी और त्वरित कार्रवाई के लिए यह बेस सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

बाड़मेर एयरबेस – ऊर्जा क्षेत्र के पास स्थित होने के कारण यह सैन्य और आर्थिक सुरक्षा दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

इन एयरबेस तक पहुँचाने के लिए सैनिकों, ईंधन और उपकरणों की आपूर्ति रेलवे नेटवर्क से होती है।

जैसलमेर, बाड़मेर और जोधपुर में बड़ी छावनियाँ (Cantonments) और कैंप स्थित हैं। जोधपुर मण्डल की रेलवे लाइनें इन छावनियों तक सीधे संपर्क प्रदान करती हैं।

सामरिक अभ्यास (Military Exercises) जैसे "ऑपरेशन डेजर्ट स्ट्राइक" और "ऑपरेशन पराक्रम" में इस नेटवर्क का महत्व बारदृबार सिद्ध हुआ है।

बाड़मेर क्षेत्र में रिफाइनरी और ऊर्जा उत्पादन संयंत्रों तक रेलवे कनेक्टिविटी है, जो रक्षा उत्पादन और आपूर्ति के लिए उपयोगी है। खनिज और पेट्रोलियम उत्पादों का सुरक्षित परिवहन रक्षा प्रतिष्ठानों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करता है। उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल केवल एक परिवहन तंत्र नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, अंतर्राष्ट्रीय संबंध और रक्षा अवसंरचना का अभिन्न आधार है।

- सीमा सुरक्षा के लिए यह सैनिकों और सैन्य सामग्री की आपूर्ति का मुख्य मार्ग है।
- आपदा प्रबंधन में यह जीवनरेखा की भूमिका निभाता है, चाहे वह बाढ़ हो, सूखा हो या महामारी।
- सीमा पार व्यापार की संभावनाएँ इसे कूटनीतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बनाती हैं, जबकि थार एक्सप्रेस इसका ऐतिहासिक प्रतीक है।
- रक्षा प्रतिष्ठानों से जुड़ाव इस मण्डल की सामरिक शक्ति को और अधिक प्रासंगिक बनाता है।

भविष्य में, डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर, सीमा क्षेत्रों में आधारभूत संरचना का विकास और रेलवे की आधुनिक तकनीक इस मण्डल को और अधिक सामरिक शक्ति प्रदान करेंगे। इस प्रकार, जोधपुर मण्डल न केवल राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों की जीवनधारा है बल्कि यह भारत की पश्चिमी सीमा की रणनीतिक ढाल भी है।

रेलवे की भूमिका

भारत के आर्थिक विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा में रेलवे की भूमिका बहुआयामी है। उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल इसका सशक्त उदाहरण है, जहाँ आर्थिक गतिविधियाँ और सामरिक आवश्यकताएँ एक दूसरे के पूरक बनकर उभरती हैं। जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर और नागौर जैसे जिले न केवल संसाधनों से समृद्ध हैं बल्कि भारतदृपाक सीमा के समीप स्थित होने के कारण सामरिक दृष्टि से भी संवेदनशील हैं। इस क्षेत्र से खनिज, कृषि उत्पाद और ऊर्जा संसाधनों की ढुलाई जोधपुर मण्डल की रेलवे लाइनों द्वारा सुनिश्चित की जाती

है। यही कारण है कि यह मण्डल **"आर्थिक विकास"** और **"राष्ट्रीय सुरक्षा"** दोनों का संतुलन साधने वाला तंत्र बन गया है।

shutterstock.com · 2088219616

1. खनिज संपदा और उनका परिवहन

(क) लिग्नाइट –

- जोधपुर मण्डल के अंतर्गत आने वाले बाड़मेर और नागौर क्षेत्र लिग्नाइट खदानों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- लिग्नाइट का उपयोग मुख्यतः बिजली उत्पादन और औद्योगिक ईंधन के रूप में होता है।
- रेलवे के माध्यम से यह खनिज राजस्थान के थर्मल पावर प्लांट्स तथा अन्य औद्योगिक इकाइयों तक पहुँचाया जाता है।
- सामरिक दृष्टि से ऊर्जा आपूर्ति निरंतर बने रहना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक है, और लिग्नाइट की समय पर ढुलाई इसमें महत्वपूर्ण योगदान देती है।

(ख) जिप्सम –

- जैसलमेर और नागौर क्षेत्र जिप्सम उत्पादन के प्रमुख केंद्र हैं।
- जिप्सम का उपयोग सीमेंट उद्योग और रसायन उद्योग में होता है।
- रेलवे वैगनों के माध्यम से जिप्सम गुजरात, मध्य प्रदेश और अन्य औद्योगिक राज्यों तक पहुँचाया जाता है।
- सामरिक महत्व यह है कि सीमेंट और निर्माण उद्योग रक्षा अवसंरचना (बंकर, एयरबेस, सड़क, पुल) निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं।

(ग) चूना पत्थर –

- राजस्थान का यह क्षेत्र उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर से समृद्ध है।
- चूना पत्थर सीमेंट उत्पादन की रीढ़ है।
- रेलवे नेटवर्क के माध्यम से यह खनिज देश के विभिन्न सीमेंट संयंत्रों तक पहुँचाया जाता है।
- सैन्य दृष्टि से, सीमेंट आपूर्ति सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के निर्माण और रखरखाव के लिए अनिवार्य है।

(घ) सामरिक महत्व

खनिज संपदा का परिवहन केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि रक्षा दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। सीमावर्ती क्षेत्रों में सेना को बुनियादी ढांचा और ऊर्जा उपलब्ध कराने में इन खनिजों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. कृषि उत्पाद और उनकी ढुलाई

थार मरुस्थल की कठोर परिस्थितियों के बावजूद, राजस्थान का यह क्षेत्र कई महत्वपूर्ण कृषि उत्पादों का उत्पादक है।

(क) जीरा –

- नागौर और जोधपुर क्षेत्र जीरा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।
- रेलवे के माध्यम से जीरे का परिवहन दिल्ली, मुंबई और निर्यात केंद्रों तक किया जाता है।
- सामरिक दृष्टि से जीरा जैसे मसाले खाद्य आपूर्ति शृंखला का हिस्सा बनकर सीमावर्ती छावनियों तक पहुँचते हैं।

(ख) बाजरा –

- बाजरा इस क्षेत्र की मुख्य अनाज फसल है।
- यह पोषक तत्वों से भरपूर अनाज न केवल स्थानीय उपभोग बल्कि सैन्य बलों की खाद्य आपूर्ति में भी प्रयुक्त होता है।
- रेलवे की मदद से बाजरे की ढुलाई शहरी और औद्योगिक केंद्रों तक होती है।

(ग) ग्वारगम –

- ग्वार राजस्थान का **"रेगिस्तानी सोना"** माना जाता है।
- इससे बनने वाला ग्वारगम तेल और गैस उद्योग में ड्रिलिंग प्रक्रिया में इस्तेमाल होता है।
- सामरिक दृष्टि से ग्वारगम का निर्यात भारत को विदेशी मुद्रा उपलब्ध कराता है और ऊर्जा उत्पादन को बल देता है।

(घ) सामरिक महत्व

कृषि उत्पादों की नियमित आपूर्ति सेना और सीमा सुरक्षा बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होती है। इस प्रकार, कृषि ढुलाई सीधे **"फूड सिक्योरिटी"** और **"डिफेंस लॉजिस्टिक्स"** से जुड़ी है।

3. ऊर्जा संसाधन और रेल संपर्क

जोधपुर मण्डल का सबसे बड़ा सामरिक महत्व ऊर्जा क्षेत्र से जुड़ा हुआ है।

(क) बाड़मेर तेल क्षेत्र –

- बाड़मेर का मंगला, भाग्यम और ऐश्वर्या तेल क्षेत्र (Cairn India द्वारा विकसित) देश के प्रमुख कच्चे तेल उत्पादक क्षेत्र हैं।
- रेलवे नेटवर्क के माध्यम से यहाँ से तेल और उसके उपोत्पाद विभिन्न रिफाइनरियों और औद्योगिक केंद्रों तक पहुँचाए जाते हैं।
- सामरिक दृष्टि से यह भारत की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करता है और आयात पर निर्भरता कम करता है।

(ख) रिफाइनरी परियोजना

- बाड़मेर रिफाइनरी (HPCL Rajasthan Refinery Ltd.) देश की सबसे आधुनिक रिफाइनरी में से एक है।
- इसके निर्माण और संचालन के लिए आवश्यक भारी मशीनरी, उपकरण और कच्चे माल की आपूर्ति रेलवे नेटवर्क से होती है।
- रक्षा आवश्यकताओं के लिए तैयार पेट्रोलियम उत्पादों की आपूर्ति भी इसी नेटवर्क से की जाती है।

(ग) सौर ऊर्जा परियोजनाएँ

- जोधपुर, बाड़मेर और जैसलमेर भारत के **"सोलर हब"** के रूप में उभर रहे हैं।
- विशाल सौर ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण के लिए आवश्यक उपकरणों और पैनलों की ढुलाई रेलवे के माध्यम से होती है।
- सामरिक दृष्टि से नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएँ भारत की आत्मनिर्भरता और पर्यावरणीय सुरक्षा को बढ़ाती हैं।

ऊर्जा संसाधनों की निर्बाध आपूर्ति सैन्य बलों के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है। रेलवे नेटवर्क यह सुनिश्चित करता है कि पेट्रोलियम उत्पाद, बिजली उत्पादन हेतु संसाधन और नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के उपकरण समय पर सीमा क्षेत्रों तक पहुँचें।

4. आर्थिक और सामरिक संतुलन का समन्वय

जोधपुर मण्डल का महत्व केवल एक **"आर्थिक कॉरिडोर"** के रूप में ही नहीं है, बल्कि यह **"सामरिक लॉजिस्टिक कॉरिडोर"** भी है।

आर्थिक योगदान – खनिज, कृषि और ऊर्जा संसाधनों की ढुलाई से न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत होती है बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर उद्योग और ऊर्जा सुरक्षा को भी बल मिलता है।

सामरिक योगदान – यही संसाधन रक्षा प्रतिष्ठानों, छावनियों और सीमा चौकियों तक पहुँचाकर राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

समन्वय का परिणाम – जब आर्थिक संसाधन रक्षा प्रणाली के लिए उपयोगी बनते हैं, तब जोधपुर मण्डल की सामरिक प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।

- उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों को आर्थिक और सामरिक दृष्टि से जोड़ने वाला सेतु है।
- खनिज संपदा का परिवहन उद्योग और रक्षा अवसंरचना दोनों के लिए आवश्यक है।
- कृषि उत्पाद सीमावर्ती छावनियों और राष्ट्रीय खाद्य आपूर्ति शृंखला को सुदृढ़ बनाते हैं।
- ऊर्जा संसाधन देश की ऊर्जा आत्मनिर्भरता और रक्षा तंत्र की स्थिरता सुनिश्चित करते हैं।

प्रमुख रेल लाइनों का विवरण

उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल भारत के पश्चिमी भाग में स्थित है और इसका मुख्यालय जोधपुर शहर में है। यह मण्डल न केवल राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में परिवहन की जीवनरेखा है, बल्कि सामरिक दृष्टि से भी अत्यंत संवेदनशील है क्योंकि इसकी रेल लाइनें सीधे भारतदृपाक सीमा तक पहुँचती हैं। इस क्षेत्र की रेलवे अवसंरचना – रेलमार्ग, ब्रॉडगेज रूपांतरण, डबल लाइन परियोजनाएँ और इलेक्ट्रिफिकेशन केवल यातायात सुगमता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, आपदा प्रबंधन और आर्थिक गतिविधियों से भी गहराई से जुड़ी हुई हैं।

1. जोधपुर मण्डल की प्रमुख रेल लाइनों का विवरण

जोधपुर मण्डल में कई महत्वपूर्ण रेलखंड हैं जो क्षेत्रीय और सामरिक दृष्टि से समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं।

जोधपुर जैसलमेर लाइन – यह लाइन थार मरुस्थल से गुजरती हुई जैसलमेर तक पहुँचती है। जैसलमेर का सामरिक महत्व विशेष रूप से है क्योंकि यहाँ भारतीय वायुसेना का एयरबेस और सेना की छावनी स्थित है।

जोधपुर – बाड़मेर – मुनाबाव लाइन :– यह लाइन सीधे भारतदृपाक सीमा तक जाती है। मुनाबाव बॉर्डर पर स्थित स्टेशन सीमा पार रेल संपर्क (खोखरापार, पाकिस्तान) के लिए जाना जाता है। थार एक्सप्रेस इसी मार्ग से चलती थी। यह लाइन सामरिक दृष्टि से भारत की **"वेस्टर्न डिफेंस लाइन"** का आधार है।

जोधपुर – फलोदी – रामदेवरा – जैसलमेर लाइन :– यह लाइन सीमावर्ती क्षेत्रों में रक्षा प्रतिष्ठानों और धार्मिक पर्यटन (रामदेवरा) दोनों को जोड़ती है।

जोधपुर – पाली – मारवाड़ लाइन :– यह लाइन औद्योगिक और वाणिज्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। पाली जिले में वस्त्र उद्योग और मारवाड़ क्षेत्र में खनिज संपदा की ढुलाई इसी मार्ग से होती है।

जोधपुर – नागौर – बीकानेर लाइन :– नागौर और बीकानेर के बीच यह मार्ग कृषि उत्पाद (जीरा, ग्वारगम, बाजरा) और खनिज परिवहन में सहायक है।

इन रेल मार्गों का सामरिक महत्व इस बात से स्पष्ट है कि यह सीमावर्ती क्षेत्रों में सैनिक बलों और उपकरणों की आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं।

2. ब्रॉडगेज रूपांतरण और डबल लाइन परियोजनाएँ

(क) ब्रॉडगेज रूपांतरण :– जोधपुर मण्डल का अधिकांश नेटवर्क पहले मीटरगेज पर आधारित था। धीरे–धीरे इन लाइनों का ब्रॉडगेज रूपांतरण किया गया ताकि भारी मालगाड़ियों और लंबी दूरी की यात्री ट्रेनों का संचालन संभव हो सके।

जोधपुर–जैसलमेर, जोधपुर–बाड़मेर–मुनाबाव और जोधपुर–नागौर–बीकानेर खंडों का ब्रॉडगेज रूपांतरण हाल के दशकों में पूर्ण हुआ। सामरिक दृष्टि से ब्रॉडगेज ट्रैक पर सेना की भारी मशीनरी, टैंक और रसद सामग्री आसानी से पहुँचाई जा सकती है।

(ख) डबल लाइन परियोजनाएँ :– सीमा के समीप स्थित रेलखंडों पर डबल लाइन की परियोजनाएँ शुरू की गई हैं ताकि यातायात क्षमता बढ़ाई जा सके। जोधपुर –दिल्ली, जोधपुर–जयपुर, जोधपुर–फलोदी–रामदेवरा

और जोधपुर–पाली–मारवाड़ जैसे खंडों में डबल लाइन की दिशा में काम हो रहा है। सामरिक दृष्टि से डबल लाइन का महत्व यह है कि युद्धकाल या आपदा की स्थिति में दोनों ओर से समानांतर यातायात संभव हो जाता है।

3. इलेक्ट्रिफिकेशन की स्थिति और सामरिक महत्व

(क) इलेक्ट्रिफिकेशन की स्थिति

- जोधपुर मण्डल में कई प्रमुख रेलखंडों पर विद्युतीकरण कार्य पूरा हो चुका है।
- जोधपुर–दिल्ली,जोधपुर–जयपुर,जोधपुर–पाली–मारवाड़ और जोधपुर–फलोदी–रामदेवरा खंड विद्युतीकृत हो चुके हैं।
- जैसलमेर और बाड़मेर की ओर इलेक्ट्रिफिकेशन तेजी से प्रगति पर है।

(ख) सामरिक महत्व

इलेक्ट्रिफिकेशन से डीजल पर निर्भरता कम होती है, जिससे सीमा पर सैन्य और आर्थिक आपूर्ति अधिक स्थिर और पर्यावरण अनुकूल बनती है। विद्युतीकरण से गति और क्षमता बढ़ने से सेना की त्वरित तैनाती संभव होती है। संकट के समय डीजल आपूर्ति प्रभावित होने पर भी इलेक्ट्रिफिकेशन नेटवर्क सैन्य अभियानों की निरंतरता सुनिश्चित करता है।

4. रेल–सड़क–वायु मार्ग समन्वय

जोधपुर मण्डल की विशेषता यह है कि यहाँ रेल नेटवर्क सड़क और वायु मार्ग से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है।

रेल और सड़क का समन्वय – राष्ट्रीय राजमार्ग–68 (जोधपुर–बाड़मेर–मुनाबाव) और राष्ट्रीय राजमार्ग–125 (जोधपुर–जैसलमेर) रेल नेटवर्क के समानांतर चलते हैं। इससे लॉजिस्टिक सप्लाई और त्वरित परिवहन में तालमेल बैठता है।

रेल और वायु मार्ग का समन्वय – जोधपुर, जैसलमेर और बाड़मेर में वायुसेना अड्डे हैं। रेलवे इन एयरबेस तक सैनिकों, उपकरणों और ईंधन की आपूर्ति करता है। साथ ही, जोधपुर और जैसलमेर में नागरिक हवाई अड्डे भी हैं, जो पर्यटन और व्यापारिक संपर्क को बल देते हैं।

त्रिस्तरीय समन्वय का महत्व – रेल–सड़क–वायु नेटवर्क मिलकर एक एकीकृत लॉजिस्टिक प्रणाली तैयार करता है। आपदा प्रबंधन में राहत सामग्री रेल से भेजी जाती है और सड़कध्हवाई मार्ग से अंतिम गंतव्य तक पहुँचाई जाती है। सैन्य अभियानों में सैनिक रेल से छावनी तक पहुँचते हैं और आगे हवाई अड्डों से सीमाई मोर्चों तक ले जाए जाते हैं।

इस प्रकार, जोधपुर मण्डल की रेलवे अवसंरचना केवल परिवहन की दृष्टि से नहीं, बल्कि भारत की पश्चिमी सीमा की सुरक्षा और आर्थिक संतुलन की दृष्टि से भी एक मजबूत स्तंभ है।

उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा नीतियों का एक प्रमुख स्तंभ है। सीमावर्ती क्षेत्रों में त्वरित सैनिक मूवमेंट, सामरिक सामग्री की ढुलाई, युद्धकालीन आपूर्ति और ठैथ्ध्सेना की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने में इसका योगदान अतुलनीय है। 1965 और 1971 के युद्धों से लेकर कारगिल संघर्ष तक, इस मण्डल ने अपनी रणनीतिक उपयोगिता को सिद्ध किया है। आज भी, आधुनिक इलेक्ट्रिफिकेशन और डबल लाइन परियोजनाओं के माध्यम से यह मण्डल भारत की वेस्टर्न डिफेंस लाइन को मजबूती प्रदान कर रहा है।

उत्तर पश्चिम रेलवे जोधपुर मण्डल की चुनौतियाँ

उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल भारत के पश्चिमी हिस्से में, थार मरुस्थल के विस्तृत भू–भाग में संचालित होता है। इसकी सामरिक और आर्थिक महत्ता निर्विवाद है, लेकिन इसके संचालन में अनेक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। मरुस्थलीय क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियाँ, अवसंरचना की सीमाएँ और सीमा के निकट सुरक्षा जोखिम इस मण्डल को अन्य मण्डलों से अलग और अधिक जटिल बनाते हैं। इन चुनौतियों का समाधान न केवल रेलवे की सुचारु कार्यप्रणाली बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय विकास दोनों के लिए आवश्यक है।

1. मरुस्थलीय क्षेत्र में रेत जमाव, गर्मी व रखरखाव की समस्याएँ :–

थार मरुस्थल का भौगोलिक स्वरूप रेलवे संचालन के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

रेत जमाव – रेतीले तूफान और हवा के कारण पटरियों पर रेत जम जाती है, जिससे ट्रेनों की गति धीमी करनी पड़ती है और दुर्घटना का खतरा बढ़ जाता है। पटरियों से रेत हटाने के लिए अतिरिक्त मानवदृशक्ति और मशीनों की आवश्यकता होती है।

गर्मी का प्रभाव – यहाँ ग्रीष्म ऋतु में तापमान 45–50 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है। इससे रेल पटरियों में थर्मल एक्सपेंशन (thermal expansion) की समस्या उत्पन्न होती है और रेल संरचना की समय–पूर्व क्षति होने लगती है।

रखरखाव की जटिलता – रेतीले क्षेत्र में बार–बार निरीक्षण और मरम्मत कार्य करना पड़ता है। इससे रखरखाव की लागत बढ़ जाती है और संचालन की स्थिरता प्रभावित होती है।

2. जल उपलब्धता एवं अवसंरचना की कमी :–

जल संकट – मरुस्थल क्षेत्र में पानी की उपलब्धता अत्यंत सीमित है। रेलवे इंजन और यार्ड संचालन के लिए जल की आवश्यकता अधिक होती है। हालाँकि आधुनिक विद्युतीकरण और तकनीकी उपायों से खपत कम हुई है, फिर भी ग्रामीण और सीमावर्ती स्टेशनों पर जल आपूर्ति चुनौती बनी रहती है।

अवसंरचना की कमी – बड़े शहरों (जैसे जोधपुर) को छोड़कर अन्य छोटे स्टेशन आधारभूत सुविधाओं से वंचित हैं। मरम्मत यार्ड, सिग्नलिंग उपकरण और यात्रियों के लिए सुविधाओं की कमी अब भी महसूस की जाती है।

पर्यटन दबाव – जैसलमेर और रामदेवरा जैसे धार्मिक व पर्यटन स्थलों पर सीजन में भीड़ बढ़ने पर अवसंरचना पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है।

3. सीमा के निकट सुरक्षा जोखिम :–

जोधपुर मण्डल का अधिकांश हिस्सा भारत–पाक सीमा से सटा हुआ है, जिससे कई सुरक्षा चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं।

सीमा पार घुसपैठ और आतंकी जोखिम – सीमावर्ती इलाकों में किसी भी प्रकार की अप्रत्याशित गतिविधि रेलवे नेटवर्क की सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है।

युद्धकालीन संवेदनशीलता – 1965 और 1971 के युद्धों में रेलवे स्टेशनों और पटरियों को सीधा निशाना बनाया गया था। इसलिए इन क्षेत्रों में हमेशा हाई अलर्ट स्थिति बनी रहती है।

महत्त्वपूर्ण स्टेशन (जैसे मुनाबाव, गडरा रोड और जैसलमेर) सामरिक दृष्टि से इतने संवेदनशील हैं कि इन पर हर समय अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती आवश्यक रहती है।

4. तकनीकी व संसाधन सीमाएँ :–

तकनीकी पिछड़ापन – कुछ हिस्सों में अभी भी आधुनिक सिग्नलिंग और ट्रैक मैनेजमेंट सिस्टम पूरी तरह लागू नहीं हुए हैं।

विद्युतीकरण की धीमी प्रगति – यद्यपि विद्युतीकरण कार्य प्रगति पर है, लेकिन कई प्रमुख सीमावर्ती खंड अब भी डीजल पर निर्भर हैं। यह सामरिक दृष्टि से एक जोखिम है।

संसाधनों की कमी – मरुस्थल क्षेत्र में श्रमिकों, तकनीकी विशेषज्ञों और मशीनरी की तैनाती चुनौतीपूर्ण होती है। इसके साथ ही, रखरखाव लागत अधिक होने के कारण संसाधनों का दबाव लगातार बढ़ रहा है।

उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल सामरिक और आर्थिक दृष्टि से जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही इसकी संचालन परिस्थितियाँ कठिन भी हैं। मरुस्थलीय रेत जमाव, उच्च तापमान, जल व अवसंरचना की कमी, सीमा से जुड़े सुरक्षा जोखिम और तकनीकीदृसंसाधन सीमाएँ इसकी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों का समाधान आधुनिक प्रौद्योगिकी (जैसे सैंड गार्ड, स्मार्ट सिग्नलिंग), अवसंरचना निवेश, और सुरक्षा सहयोग से संभव है। यदि इन समस्याओं को रणनीतिक दृष्टिकोण से संबोधित किया जाए तो जोधपुर मण्डल न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा में और मजबूत भूमिका निभाएगा बल्कि पश्चिमी राजस्थान के सामाजिकदृआर्थिक विकास की आधारशिला भी बनेगा।

सरकारी नीतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएँ

उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल भारत के पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित है और यह न केवल राजस्थान की सामाजिक – आर्थिक प्रगति का माध्यम है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। भारत सरकार द्वारा लागू की गई अवसंरचना विकास नीतियाँ, जैसे भारतमाला परियोजना और डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर, इस मण्डल के भविष्य को नई दिशा प्रदान कर रही हैं। इसके अतिरिक्त सीमा पार व्यापार, नई रेल लाइनों का विस्तार, स्मार्ट रेलवे स्टेशन और लॉजिस्टिक हब जैसे प्रकल्प इसे आधुनिक और सामरिक दृष्टि से और अधिक मजबूत बना रहे हैं।

1. भारतमाला परियोजना और जोधपुर मण्डल :–

भारत सरकार की भारतमाला परियोजना राष्ट्रीय राजमार्गों के सुदृढ़ीकरण और सीमावर्ती क्षेत्रों में त्वरित संपर्क स्थापित करने पर केंद्रित है।

रेल–सड़क समन्वय :– भारतमाला के अंतर्गत जोधपुर, बाड़मेर और जैसलमेर को आधुनिक सड़कों से जोड़ा जा रहा है। इससे रेलवे और सड़क मार्ग का लॉजिस्टिक समन्वय सुदृढ़ होगा।

सीमाई आपूर्ति :– तेज सड़क नेटवर्क होने से रेलमार्गों तक सामग्री पहुँचाना आसान होगा, जिससे सैनिक रसद और सामरिक आपूर्ति और मजबूत होगी।

पर्यटन विकास :– जैसलमेर, ओसियां और रामदेवरा जैसे धार्मिक व पर्यटन स्थल बेहतर सड़क–रेल संपर्क से लाभान्वित होंगे।

इस प्रकार, भारतमाला परियोजना अप्रत्यक्ष रूप से जोधपुर मण्डल की रेलवे कार्यप्रणाली को गति और सहयोग प्रदान करती है।

2. डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (DFC) और संभावनाएँ

डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर भारत की सबसे महत्त्वाकांक्षी रेल परियोजनाओं में से एक है।

पश्चिमी डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (WDFC) – यह कॉरिडोर दिल्ली–मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर (DMIC) को जोड़ता है और इसका सीधा लाभ जोधपुर मण्डल को मिलेगा।

औद्योगिक परिवहन – मारवाड़ क्षेत्र से निकलने वाले खनिज (जिप्सम, चूना पत्थर, लिग्नाइट) और बाड़मेर तेल क्षेत्र का परिवहन तेजी से संभव होगा।

सैन्य रसद क्षमता – भारी मालगाड़ियों के लिए अलग कॉरिडोर होने से सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य सामग्री की ढुलाई और भी प्रभावी होगी।

क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था – कॉरिडोर के कारण जोधपुर और पाली जिले में लॉजिस्टिक हब और औद्योगिक पार्क विकसित होने की संभावना है।

इस प्रकार, DFC से जोधपुर मण्डल न केवल आर्थिक बल्कि सामरिक दृष्टि से भी अत्यधिक सशक्त बनेगा।

3. सीमा पार व्यापार पुनः आरंभ होने की संभावनाएँ

भारत–पाक संबंधों में सुधार होने पर सीमा पार व्यापार का पुनः आरंभ इस मण्डल के लिए बड़ा अवसर बन सकता है।

मुनाबाव–खोखरापार कनेक्शन :– पहले थार एक्सप्रेस के माध्यम से दोनों देशों के बीच यात्रियों और वस्तुओं का सीमित आदानदृप्रदान होता था। यदि भविष्य में व्यापारिक संबंध सुधरते हैं तो यह मार्ग अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का द्वार बन सकता है।

स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव :– बाड़मेर और जैसलमेर के ग्रामीण क्षेत्रों को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच मिलेगी, जिससे कृषि और हस्तशिल्प को नई पहचान मिलेगी।

रणनीतिक महत्व :– सीमा पार व्यापार से आर्थिक कूटनीति को बल मिलेगा और सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति एवं स्थिरता स्थापित करने की संभावना बढ़ेगी।

4. स्मार्ट रेलवे स्टेशन और लॉजिस्टिक हब

सरकार द्वारा रेलवे आधुनिकीकरण के तहत स्मार्ट रेलवे स्टेशन विकसित किए जा रहे हैं।

जोधपुर स्टेशन :– स्मार्ट स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिसमें अत्याधुनिक यात्री सुविधाएँ, डिजिटल प्लेटफॉर्म और मल्टीदृमॉडल कनेक्टिविटी शामिल हैं।

जैसलमेर और बाड़मेर स्टेशन :– यहाँ पर्यटन और सामरिक दृष्टि से विशेष सुविधाओं का विकास किया जा रहा है।

लॉजिस्टिक हब :– पाली और जोधपुर क्षेत्र में लॉजिस्टिक हब विकसित करने की योजना है, जहाँ से खनिज, कृषि उत्पाद और ऊर्जा संसाधनों का परिवहन अधिक संगठित रूप में होगा।

5. रक्षा–सिविल समन्वय

जोधपुर मण्डल का सबसे बड़ा महत्व इसका रक्षा–सिविल समन्वय है।

सैन्य ट्रेनें – सेना और BSF के लिए नियमित रूप से विशेष ट्रेनों का संचालन।

एयरबेस कनेक्टिविटी – जोधपुर, जैसलमेर और बाड़मेर वायुसेना अड्डों तक रेलवे के माध्यम से रसद सामग्री की आपूर्ति।

साझा अवसंरचना – कई रेल–सड़क परियोजनाएँ ऐसी हैं जो सेना और नागरिक दोनों के लिए उपयोगी हैं।

आपदा प्रबंधन – बाढ़, सूखा या अन्य आपदा की स्थिति में रेलवे त्वरित राहत और आपूर्ति सुनिश्चित करता है।

भविष्य की चुनौतियाँ और समाधान

भविष्य की संभावनाओं के साथ कुछ चुनौतियाँ भी बनी रहेंगी–

मरुस्थलीय क्षेत्र में रेत जमाव और उच्च तापमान।

सीमा पार तनाव की स्थिति में सुरक्षा जोखिम।

विद्युतीकरण और डबल लाइन कार्यों को शीघ्र पूरा करना।

जल संसाधनों और अवसंरचना का विकास।

इन समस्याओं के समाधान हेतु आधुनिक तकनीक, स्वचालित ट्रैक सफाई मशीनें, स्मार्ट सिग्नलिंग और रक्षा रेलवे समन्वय को और मजबूत करना आवश्यक है।

उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल सरकारी नीतियों और भविष्य की योजनाओं से एक नई दिशा की ओर अग्रसर है। भारतमाला और डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर जैसी परियोजनाएँ इसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लॉजिस्टिक शक्ति बनाएंगी। सीमा पार व्यापार की संभावनाएँ, नई रेल लाइनों का विस्तार और स्मार्ट स्टेशनदृलॉजिस्टिक हब का विकास इसे और आधुनिक रूप देंगे। सबसे महत्त्वपूर्ण, रक्षादृसिविल समन्वय के कारण यह मण्डल भारत की सुरक्षा रणनीतियों का आधार स्तंभ बना रहेगा। इस प्रकार, जोधपुर मण्डल भविष्य में केवल परिवहन नेटवर्क का केंद्र नहीं रहेगा, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और क्षेत्रीय विकास का सेतु बनकर उभरेगा।

SWOT :-

उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल भारत के पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र में फैला है और यह पाकिस्तान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा से जुड़ा होने के कारण विशेष सामरिक महत्व रखता है। यह मण्डल न केवल यात्रियों और माल ढुलाई के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि रक्षा आपूर्ति, सीमावर्ती कनेक्टिविटी, पर्यटन और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की संभावनाओं को भी प्रभावित करता है। इसका मूल्यांकन यदि SWOT विश्लेषण (Strength,Weakness,Opportunity,Threat) तथा क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से किया जाए तो इसकी रणनीतिक भूमिका और स्पष्ट होती है।

Strength (शक्तियाँ):– जोधपुर मण्डल का सबसे बड़ा सामरिक बल इसका भौगोलिक स्थान है। यह बाड़मेर, जैसलमेर और जोधपुर जैसे सीमावर्ती जिलों को देश के मुख्य रेल नेटवर्क से जोड़ता है। यहाँ से सेना और वायुसेना के लिए रसद और सैन्य सामग्री की आपूर्ति त्वरित रूप से की जाती है। इसके अतिरिक्त, खनिज, तेल और ऊर्जा संसाधनों से भरपूर यह क्षेत्र रेलवे माल ढुलाई के लिए अत्यधिक उपयोगी है।

Weakness (कमजोरियाँ) :– मरुस्थलीय भूभाग और कठोर जलवायु इसकी सबसे बड़ी चुनौती है। रेत जमाव, उच्च तापमान और सीमित जल संसाधनों के कारण रेल परिचालन कई बार प्रभावित होता है। इसके अलावा, कई मार्ग अभी भी सिंगल लाइन और अपर्याप्त विद्युतीकरण वाले हैं, जिससे गति और क्षमता सीमित हो जाती है।

Opportunity (अवसर) :– डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर और भारतमाला परियोजना से इस मण्डल के लॉजिस्टिक महत्व में भारी वृद्धि होगी। मुनाबावदृखोखरापार रेल कनेक्शन के माध्यम से सीमा पार व्यापार पुनः आरंभ होने पर यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापारिक सेतु बन सकता है। साथ ही, पर्यटन (जैसलमेर, ओसियां, रामदेवरा) और धार्मिक यात्राओं को प्रोत्साहन देने से यात्री संख्या में भी वृद्धि होगी।

Threat (खतरे) :– सीमा पार तनाव और सुरक्षा जोखिम इसकी सबसे बड़ी चुनौती है। भारतदृपाक संबंधों में अस्थिरता होने पर व्यापार और यातायात प्रभावित हो सकता है। इसके अतिरिक्त, मरुस्थलीय क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर का रखरखाव कठिन है, तथा भविष्य में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और तकनीकी आवश्यकताओं को पूरा करना भी चुनौतीपूर्ण रहेगा।

क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से मूल्यांकन

क्षेत्रीय स्तर पर जोधपुर मण्डल राजस्थान के पश्चिमी जिलों की जीवनरेखा है। यह न केवल कृषि और खनिज आधारित उद्योगों को सहारा देता है बल्कि स्थानीय रोजगार और पर्यटन को भी गति प्रदान करता है। राष्ट्रीय स्तर पर यह मण्डल रक्षा आपूर्ति श्रृंखला का आधार है, जिससे यह भारतीय सुरक्षा रणनीति का अभिन्न अंग बनता है। डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के माध्यम से यह दिल्लीदृमुंबई औद्योगिक कॉरिडोर को सहारा देगा। अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो यदि सीमा पार व्यापार आरंभ होता है तो यह मण्डल भारत को मध्य एशिया और पश्चिम एशिया तक जोड़ने वाला प्रवेश द्वार बन सकता है।

अन्य मण्डलों की तुलना में सामरिक योगदान

यदि उत्तर पश्चिम रेलवे के अन्य मण्डलों की तुलना की जाए तो जोधपुर मण्डल का योगदान विशिष्ट है। जहाँ जयपुर या अजमेर मण्डल मुख्य रूप से यात्री और औद्योगिक ट्रैफिक पर केंद्रित हैं, वहीं जोधपुर मण्डल सीधे सीमा से जुड़ा होने के कारण सामरिक दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण है। बाड़मेर और जैसलमेर क्षेत्र में सेना की उपस्थिति और वायुसेना अड्डों तक पहुँच इसकी विशेषता है। युद्ध अथवा आपात स्थिति में इस मण्डल की भूमिका अन्य मण्डलों की तुलना में कहीं अधिक निर्णायक सिद्ध होती है।

रणनीतिक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जोधपुर मण्डल केवल एक साधारण रेलवे खंड नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, क्षेत्रीय विकास और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। इसकी शक्तियाँ और अवसर इसे भविष्य के लिए अत्यधिक उपयोगी बनाते हैं, जबकि कमजोरियाँ और खतरे चुनौतियों के रूप में मौजूद हैं। अन्य मण्डलों की तुलना में इसकी भूमिका सामरिक दृष्टि से कहीं अधिक गहन है, और यही कारण है कि जोधपुर मण्डल को उत्तर पश्चिम रेलवे का सामरिक धुरी (Strategic Pivot) कहा जा सकता है।

निष्कर्ष :–

उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मण्डल का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यह मण्डल केवल एक साधारण परिवहन व्यवस्था नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, सामरिक संतुलन और क्षेत्रीय विकास का महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। इसके भौगोलिक स्वरूप, अवसंरचना, सामरिक योगदान, आर्थिक संतुलन, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर आधारित सभी बिंदुओं को जोड़कर देखने पर इसका बहुआयामी महत्व स्पष्ट रूप से सामने आता है। जोधपुर मण्डल की स्थिति थार मरुस्थल के बीच भारत–पाक सीमा से जुड़ी हुई है। इस कारण इसकी रेलवे लाइनों का सामरिक महत्व अत्यधिक है। मुनाबाव, गडरा रोड और जैसलमेर जैसे स्टेशन सीमावर्ती क्षेत्रों से सीधे संपर्क स्थापित करते हैं। यहाँ से न केवल सामान्य माल और यात्रियों की ढुलाई होती है, बल्कि युद्ध अथवा आपात स्थिति में सैनिकों, टैंकों और रसद सामग्री का त्वरित परिवहन भी संभव है। 1965 और 1971 के भारत–पाक युद्धों ने इस मण्डल के महत्व को और भी सिद्ध किया, जब रेल नेटवर्क ने सेना की आपूर्ति श्रृंखला को सुचारु बनाए रखा।

जोधपुर मण्डल की आर्थिक भूमिका भी सामरिक महत्व से जुड़ी हुई है। यह क्षेत्र खनिज संपदा लिग्नाइट, जिप्सम, चूना पत्थर का प्रमुख उत्पादक है, जिनका परिवहन रेलवे के माध्यम से देशभर में होता है। बाड़मेर का तेल क्षेत्र और सौर ऊर्जा परियोजनाएँ इस मण्डल को ऊर्जा आपूर्ति और ऊर्जा सुरक्षा का केंद्र बनाती हैं। वहीं, जीरा, बाजरा, ग्वारगम जैसे कृषि उत्पाद न केवल स्थानीय किसानों के लिए आय का स्रोत हैं, बल्कि रक्षा प्रतिष्ठानों और खाद्य आपूर्ति श्रृंखला का भी हिस्सा हैं। इस प्रकार रेलवे आर्थिक और सामरिक दोनों दृष्टियों से संतुलन बनाए रखता है।

जोधपुर मण्डल में प्रमुख रेल लाइनें–जैसलमेर, बाड़मेर, फलोदी, पाली और नागौर मार्ग/पूरे पश्चिमी राजस्थान को देश के अन्य हिस्सों से जोड़ती हैं। ब्रॉडगेज रूपांतरण और डबल लाइन परियोजनाओं ने इसकी क्षमता बढ़ाई है, वहीं विद्युतीकरण से संचालन में तेजी और स्थिरता आई है। रेल–सड़क–वायु मार्ग समन्वय के माध्यम से सेना और नागरिक यातायात दोनों को गति मिलती है। यह समन्वय भविष्य की रक्षादृसिविल नीति में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। जोधपुर मण्डल की सबसे बड़ी भूमिका रक्षा और सुरक्षा नीतियों में है। सीमावर्ती क्षेत्रों में सैनिकों की त्वरित मूवमेंट, सामरिक सामान जैसे टैंक, हथियार और ईंधन की ढुलाई तथा BSF और सेना के लिए विशेष सैन्य ट्रेनों का संचालन इस मण्डल की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं। आपदा प्रबंधन की दृष्टि से भी इसकी उपयोगिता साबित हुई है, जब बाढ़ या सूखे जैसी स्थितियों में राहत सामग्री और आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति रेलवे द्वारा तुरंत की जाती है।

हालाँकि, इस मण्डल के सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। मरुस्थलीय क्षेत्र में रेत जमाव और गर्मी के कारण पटरियों और इंजन का रखरखाव कठिन हो जाता है। जल की कमी और अवसंरचना की सीमाएँ संचालन को प्रभावित करती हैं। इसके अलावा, सीमा के निकट होने के कारण सुरक्षा जोखिम सदैव मौजूद रहते हैं। तकनीकी और संसाधन संबंधी कमियाँ भी भविष्य की परियोजनाओं में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं। सरकारी नीतियाँ इस मण्डल को नई दिशा दे रही हैं। भारतमाला और डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर जैसी परियोजनाओं से लॉजिस्टिक हब और स्मार्ट स्टेशन विकसित होंगे। सीमा पार व्यापार पुनः आरंभ होने की संभावना से यह मण्डल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रवेश द्वार बन सकता है। साथ ही, रणनीतिक दृष्टि से नई रेल लाइनों और विस्तार योजनाओं पर भी कार्य हो रहा है। रक्षा और नागरिक समन्वय से यह क्षेत्र भविष्य में और अधिक सामरिक रूप से मजबूत होगा। रणनीतिक विश्लेषण में स्पष्ट है कि जोधपुर मण्डल की शक्तियाँ–भौगोलिक स्थिति, रक्षा कनेक्टिविटी और संसाधन–इसे अद्वितीय बनाती हैं। कमजोरियाँ–मरुस्थलीय चुनौतियाँ और अवसंरचना की कमी–सुधार की माँग करती हैं। अवसर–सीमा पार व्यापार और नई परियोजनाएँ–इसके महत्व को और बढ़ाते हैं, जबकि खतरे–सीमा तनाव और सुरक्षा जोखिम–सावधानी की आवश्यकता को दर्शाते हैं। अन्य मण्डलों की तुलना में इसका सामरिक योगदान कहीं अधिक है।

सभी पहलुओं को मिलाकर देखा जाए तो उत्तर पश्चिम रेलवे का जोधपुर मण्डल भारत की रक्षा व्यवस्था, ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक प्रगति और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह मण्डल केवल परिवहन का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय शक्ति का प्रतीक है। इसकी चुनौतियों को दूर करते हुए यदि अवसरों का सही उपयोग किया जाए तो यह आने वाले समय में भारत की पश्चिमी सीमा का सामरिक और आर्थिक स्तंभ बन सकता है।

संस्तुत पुस्तकें

1. History of Railways in Rajasthan : लेखक – राम पांडे प्रकाशक :– Shodhak 2003

राजस्थान में रेलवे विकास का विस्तृत विवरण, जिसमें जोधपुर मंडल के गठन और विस्तार पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

2. Jodhpur Railway लेखक – आर. आर. भंडारी प्रकाशक :– Northern Railway Publications, New Delhi 1982

जोधपुर रेलवे का समग्र इतिहास, मानचित्र, और विस्तृत तकनीकी विवेचना प्रस्तुत करती पुस्तक।

3. A Short History of Indian Railways लेखक अज्ञात सामान्य संदर्भ लेखकों द्वारा)

प्रकाशक Tracks2Travel की सूची के अनुसार, उपलब्ध (2025)

भारतीय रेलवे का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय, जिसमें रेलवे के स्थापत्य और विकास की रूपरेखा है।

4. The Great Indian Railway Atlas (विषय सूची में उल्लेख)

Railway नेटवर्क का मानचित्रात्मक विश्लेषण, जिसमें सीमावर्ती और रणनीतिक लाइनों का उल्लेख हो सकता है।

5. Indian Railways – A Visual Journey: Transforming a Nation's Destiny

राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक दृष्टिकोण से भारतीय रेलवे का दृश्यात्मक इतिहास।

6. A History of Indian Railways लेखक :– G.S. Khosla

भारतीय रेलवे के समग्र ऐतिहासिक दस्तावेजों में से एक, जिसे संदर्भ पुस्तक के रूप में मान्यता प्राप्त है।

7. Management of Indian Railways Since लेखक :– T.K. Malik, 1986

रेलवे नीति और प्रबंधन के ऐतिहासिक विकास पर विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती पुस्तक।

8. Future of rail transport in India (Wikipedia लेख, संदर्भित)

भारत में सीमा–सम्बंधित रणनीतिक रेल लाइनों की वर्तमान स्थितियों और प्रस्तावों का विवरण।

9. Riding the Tracks of Time: Indian Railways

देश में रेल विकास की पहलुओं कृ विशेष रूप से 1947 पूर्व निर्माण एवं रणनीतिक पहल का उल्लेख।

10. History of Indian Railways (Scribd पर उपलब्ध)

1853 से ब्रिटिश शासनकाल में रेलवे की शुरुआत और विकास की उल्लेखनीय जानकारी प्रदान करता है।

11. Wikipedia